परिशिष्ट
तथा
संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रिय राजेन्द्र राव। यह सामग्री शायद आपके कुछ काम आए। आपका पत्र खो गया था इसलिए पहले उत्तर नहीं दे पाई

कहानी का नाम : शहर के नाम

[illegible handwritten marginal note]

रचना प्रक्रिया :

किसी कहानी की रचना प्रक्रिया को अलग से याद कर भी देखा जा सकता है और स्वयं लेखक उसका विश्लेषण कैसे कर सकता है, मेरी समझ से बाहर है। इस बारे में डाक्टर नारायण के पास भी गयी थी तो उन्होंने चित्र और टाम बॉटोमार का जिक्र किया। मुझे उनका वक्तव्य इस जिज्ञासा के उत्तर के रूप में इतना उपयुक्त लगा कि उसी को उद्धृत करना चाहूँगी। टाम बॉटोमोर से उनके मित्र, मर्लेविल्स : ल आलतो द माने " के बारे में पूछा गया कि जहाँ " माने " को ऐसी आकृतियाँ दिखलाई देती थीं, उन्हें (तावूत) क्यों नज़र आए ? उनका जवाब था कि " इस प्रक्रिया की विद्वतापूर्ण व्याख्या मेरे बस से बाहर है। ऐसा नहीं है कि इसकी विद्वतापूर्ण व्याख्या हो ही नहीं सकती ? (जरूर हो सकती है।) यह व्याख्या अनमोल हो सकती है, बावजूद भी पर उसका रहस्य फिर भी अक्षुण्ण बना रहेगा।"

परिचय :

यह काम आसान है। जन्म हुआ 25 अक्तूबर 1938 को स्कूल में जन्म तिथि लिखाई गई 25 अगस्त 1938। स्कूल पास करने तक 16 साल पूरे करने की मजबूरी रही होगी तो अब तक तमाम सरकारी कागजातों पर तारीख 25 अगस्त है। और पुस्तकों पर 25 अक्तूबर। जाने दें। दो माह ही तो उम्र बढ़ी। लगता तो ऐसा है जैसे पैदा ही पचास के हुए थे। बचपन बीमारी में, बीता, छोटी उम्र में बड़ी किताबें पढ़ डालीं, प्रश्न तो उठनी ही थी। यूँ पढ़ाई-लिखाई भी की। अर्थशास्त्र में एम.ए. किया और तीन साल पढ़ाया भी। फिर लगा, क्या बकवास है। दूसरे देशों में तैयार की गई व्याख्याएँ अपने देश पर थोपने का कायदा। देश का " विकास " बनाने से तो अच्छा है कि फिक्शन रचा जाए। जो यथार्थ की अपनी भूमि पर टिका तो होगा। इस बीच विवाह हुआ, बच्चे भी, अभिनय किया, और लेखन का चस्का। 1970 में लिखना शुरू किया तो पहला परिचय पत्रित पुस्तकों से हुआ था। बाद में (इधर की) लेखन और

1975-76 का दौर इमरजेन्सी का था। संयोगवश मैंने एक कम उम्र लड़की को जाना, जो नुक्कड़ नाटक आदि करती थी। इमरजेन्सी के दौरान उस पर सरकार विरोधी (नक्सलवादी) होने का आरोप लगा। घर वाले घबरा गये। समझा-बुझा कर या डरा-धमका कर उसे विदेश पढ़ने भेज दिया गया। वहाँ रहते हुए उसका मन काफी उद्वेलित रहा, अपने जीवन को लेकर भी और अपने देश की स्थिति को लेकर भी। काफी बरसों बाद वह लौट कर आई और उसके कुछ ही दिनों बाद उसने खुदकुशी कर ली। कारण मैं नहीं जानती। उसके कुछ पत्र मैंने पढ़े और मुझे लगा जैसे वे मैंने ही लिखे हों।

बरसों तक मेरे मन को झकझोरती रही। ऐसी ही एक दो और घटनाएँ जो इमरजेन्सी में घटीं, मेरी स्मृति का अवचेतन अंग बन कर बसी रहीं। फिर इमरजेन्सी हट गई। मेरे पिता, जो इमरजेन्सी से बहुत बेचैन थे, उसके हटाये जाने का शुभ समाचार पाने के लिए जीवित नहीं रहे। फिर काफी बरस बीत गये, करीब दस। स्मृति के लिए दस बरस क्या हैं, कुछ नहीं।

यह पृष्ठभूमि है। पर शायद के नाम, कहानी क्यों और कैसे लिखी गई, तब और अभी क्यों, ऐसे और ऐसे ही क्यों, मैं नहीं जानती।

प्रिय राजेन्द्र जी,
कुछ सामग्री मैंने आपको पहले भेज दी, मिल गई होगी। यह कुछ और सामग्री है।
पुस्तक के लिए

दि. 5-4-89

1. मृदुला जी, आप इस बात को स्वीकारती हैं कि अंतर्द्वन्द्व विहीन पात्र हमारे आपके कथानकों में नहीं होते यानि अन्तर्द्वन्द्व का उलझाव आपके पात्रों में होता है मगर क्या इससे हम किसी निष्कर्ष पर पहुँच पाते हैं ?

2. 'मैं और मैं' आपका निहायत ही आत्म केन्द्रित पात्रों वाला उपन्यास है। साथ ही आत्मालाप पूर्ण शैली से युक्त है। इस उपन्यास के कथासूत्र क्या आपके व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं या 'आँखिन देखी' किसी बाह्य कथासूत्र पर आधारित हैं ?

3. चाहे 'उसके हिस्से की धूप' हो चाहे 'चित्तकोबरा' आप हमेशा नायिका के साथ होती हैं। इधर 'मैं और मैं' की माधवी के साथ आप कुछ जरूरत से ज्यादा हो गयी हैं। कौशल कुमार और माधवी यदि देखा जाये तो दोहन और शोषण के समान बिंदुओं पर स्थित हैं। फिर आप माधवी का पक्ष क्यों अधिक ले गईं।

1. मेरे कथानकों में ही क्यों ? मैं मानती हूँ कि अन्तर्द्वन्द्व विहीन "पात्र" साहित्य में ही नहीं, जीवन में भी नहीं होते । चेतन मनुष्य वह भी गतिशील समाज में रहने वाला, चाहे तो आप उसे विघटनशील समाज कहें अथवा विकासशील, अन्तर्द्वन्द्व विहीन कैसे हो सकता है । द्वन्द्व चाहे व्यवस्था के टकराव से पैदा हो चाहे किसी अन्य व्यक्ति के, उसका समाधान निकालने के लिए, अन्ततः मनुष्य को अन्तर्द्वन्द्व के गुजरना पड़ता है । अन्तर्द्वन्द्व विहीन केवल वह हो सकता है , जो निर्वाण प्राप्त कर चुका हो । अन्तर्द्वन्द्व के मंथन से निष्कर्ष तो निकलता है, कुछ न कुछ पर निष्कर्ष निकलते ही फिर कोई द्वन्द्व प्रारम्भ हो जाता है । आप जिसे उलझाव कह रहे हैं मैं उसे जीवन की मूलभूत प्रक्रिया कहती हूँ ।

मैं विश्वास करती हूँ कि मुझे सिर्फ खुद को ही, बेदर्दी से निरावरण करके देखने का अधिकार है; सिर्फ अपनी ही चीर-फाड़ मैं कर सकती हूँ । इसलिए मुझे किसी न किसी पात्र के साथ होना पड़ता है । यह साधारण नहीं होता । शुरू शुरू में मैं जानती भी नहीं थी कि मेरे साथ ऐसा हो रहा है । मैं भी आपकी तरह इस नतीजे पर अब, पाँच उपन्यास लिख लेने के बाद, पहुँची हूँ कि, मेरे लेखन की यह अनिवार्यता है । सृजन करते हुए मैं किसी को अपने इतने " साथ" कर लेती हूँ कि जिस बेबाकी से खुद को देखती हूँ, उसी से उसे भी देखूँ और उसके माध्यम से ताकी सबको ।

यह अच्छा है या बुरा, मैं नहीं जानती शायद यह मेरी रचना प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, अब तक ।

21. मनु, मनीषी, माधवी इन तीनों नायिकाओं में से सबसे ज़्यादा अपनी सी कौन लगती है ?

कोई नहीं। न वे और न "अनित्य" की शुभा, प्रभा, काजल या वंशाज की रेखा। सब में मैं थी, पर जब वे कागज़ पर उतर आईं तो मैं किसी में नहीं बची। सब अपने-अपने रास्ते बढ़ीं और अपने तर्कसंगत चरम पर पहुँच गईं। मैं पीछे रह गई, जीवन में जकड़ी, पर उनसे अधिक मुक्त भी। हर उस अनुभव को जीने के लिए आज़ाद, जो अब उनका नहीं हो सकता।

20/12/88

प्रिय राजेन्द्र सेठ,

मुझे समय पहले आपका पत्र मिला था। जो उपन्यास आपको मिले हैं, उनके अलावा तीन उपन्यास और हैं। उसके हिस्से की धूप - (राजकमल प्रकाशन पेपरबैक्स में उपलब्ध), वंशज (सरस्वती विहार पेपरबैक्स में उपलब्ध) और "मैं और मैं" (नेशनल पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित)

मुझे शोध कार्य इन उपन्यासों पर हुआ है पर अधिकतर [illegible] हुए हैं। महिला कथाकार की दृष्टि से किया गया है। मेरी शायद पुस्तक कोई नहीं होगी। मैं सर्वथा आदि होगी। मैं समझती हूँ कि उपन्यासों का अनुशीलन महिला कथाकार के उपन्यासों की तरह आप पैमाने नजरिये से नहीं होना चाहिए।

मेरे उपन्यासों में स्त्री पुरुषों अन्तर्संबंधों का विश्लेषण अवश्य होता है पर साथ ही व्यापक (सामाजिक आर्थिक - राजनीतिक) संदर्भ का प्रभाव स्त्री-पुरुष दोनों पात्रों पर पड़ता है। मेरे लिहाज से प्रस्थान बिंदु रहे हैं, मेरे पात्र, केवल पुरुष नहीं, स्त्रियाँ भी, केवल नर-नारी नहीं सामाजिक आर्थिक इकाइयाँ भी होते हैं। परस्पर संबंधों की दुनिया तक सीमित न रह कर स्त्री पात्र व्यापक सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक संदर्भों में रेखांकित होती हैं। उदाहरण स्वरूप - अनित्य में काजल बनर्जी, संगीता, प्रभा तथा कुंजा और स्वर्णा।

मैं और मैं ने [illegible] ।
~~[illegible]~~ पितृसत्ता [illegible] ने [illegible]
उसके विरुद्ध [illegible] की
भूमिका और अपनी सारी (पर
मूल नहीं हूँ)
हिंदी साहित्य में
स्त्री [illegible] जो [illegible]
[illegible] उसका [illegible]
[illegible] पुरुष की संस्कृति में
होता है, [illegible]
[illegible] है । [illegible]
[illegible]
[illegible] मैं [illegible] हूँ
[illegible] उसका अनुशीलन
होना चाहिए ।

[illegible]
को [illegible] के [illegible]
में [illegible] हूँ
इससे [illegible] सहायता मिलेगी
[illegible] की [illegible] हूँ
[illegible]

पहला मोड़ FIRST FOLD

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

[illegible] Charges 15 Paise

भारत INDIA 35 35

Shri Rajendra Pandurang Pate
H.N 2716 D Ward
Kolhapur 416002
Maharashtra

पिन PIN 4 1 6 0 0 2

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
भेजने वाले का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :
Maidula Garg
E 118 Masjid Moth (Gr. [illegible])
N. Delhi

पिन PIN 1 1 0 0 4 8